ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

साहित्य एवं संस्कृति

'बटोहिया' और 'अछूत की शिकायत' के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार

डॉ. बलभद्र

श्री रामकृष्ण महिला महाविद्यालय,
गिरिडीह, झारखण्ड - 815301
balbhadra1964@gmail.com

रघुवीर नारायण की एक कविता है 'बटोहिया' और हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत'। ये दोनों भोजपुरी के कवि की भोजपुरी कविताएँ हैं। दोनों दो मिजाज की। पर, दोनों ही महत्वपूर्ण। ये दोनों एक ही कालखंड की रचनाएँ हैं और दोनों के रचनाकार एक ही प्रदेश(बिहार) के थे। एक प्रदेश, एक भाषा, एक कालखंड की होते हुए ये दोनों जो मूलतः गीत हैं; दो भावभूमियों, भिन्न विचारों, परिवेशों, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों, चुनौतियों और भिन्न किस्म के उद्वेलनों के गर्भ से निकली हुई हैं। भिन्नताओं के बहुस्तरों-बहुरूपों के साथ ये दोनों रचनाएँ भोजपुरी की बहुपठित, बहुचर्चित और बहुश्रुत रचनाएँ हैं। इन दोनों रचनाओं के संदर्भ में यह भी एक तथ्य है कि इनके रचनाकारों की ये इकलौती रचनाएँ हैं जो इतनी चर्चित हुईं। हीरा डोम की तो इस एक 'अछूत की शिकायत' के अलावा दूसरी कोई रचना नहीं मिलती। जबकि हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू और भोजपुरी के अच्छे जानकार और कई कविताओं के रचनाकार रघुवीर नारायण की दूसरी कोई भी रचना इस स्तर की न हो सकी। रघुवीर जी के 'बटोहिया' को देशभक्ति का गीत माना गया है और हीरा डोम के 'अछूत की शिकायत' को वर्णवादी सत्ता-व्यवस्था के प्रति 'शिकायत' का गीत।

'बटोहिया' की रचना सन 1911 में हुई थी। माना जाता है कि इसका संदर्भ जॉर्ज पंचम के भारत आगमन का है। रघुवीर जी ने 'बटोही' के रूप में जॉर्ज पंचम को संबोधित किया है। जॉर्ज पंचम को किसी शासक या किसी तंत्र के नुमाइंदे के रूप में न लेकर 'बटोही' (यात्री) के रूप में लेना, किसी गैर मुल्क के यात्री के रूप में; और उसे भारत के प्राकृतिक-सांस्कृतिक वैभव और जन-जीवन के विविध पहलुओं को देखने-समझने का निवेदन - बार-बार महसूस होता है कि कवि ने एक स्ट्रेटजी के तहत ऐसा

किया है। लगता है कि जॉर्ज पंचम तो एक बहाना है, देशवासियों को संबोधित यह तराना है। 'बटोहिया' की यह गर्वीली विनम्रता संवादधर्मी है और भारत के स्वाधीनता-संग्राम में अपनी भूमिका निभाती हुई है।

इस गीत की पहली पंक्ति है - 'सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से'। इस पर बारम्बार विचार किया है। सबसे पहले तो यह कि यह गीत आर.एस. एस. की तथाकथित 'वन नेशन' की थ्योरी को नकार दे रहा है। इस गीत के अनुसार भारत देश के भीतर कई 'देस' हैं। यहाँ 'देश' और 'देस' के बीच के अंतर को समझ लेना होगा। लोक में 'देस' का मतलब अपने गाँव-घर का क्षेत्र होता है जहाँ की भाषा-शैली, रीति-रिवाज, रोजी-रोजगार, जीवन-शैली आदि एक जैसे होते हैं। जो भोजपुरी भाषा, समाज और संस्कृति के जानकार होंगे वे जानते होंगे कि भोजपुरी में जिसको 'परदेस' कहा जाता है वो 'विदेश' के अर्थ में नहीं है। भोजपुरी लोकगीतों में कलकत्ता परदेस के रूप में आया है। उदाहरण देखें -'गवना कराई पिया घरे बइठवलें / अपने गइलें परदेस।' और 'लागल लागल झुलनिया के धक्का / बलम कलकत्ता चले गए।' तो, इस गीत के अनुसार यानी बटोहिया के अनुसार, भारत कई 'देसों', कई भाषाओं, कई संस्कृतियों, कई धर्मों, कई मान्यताओं का देश है। यहाँ की प्रकृति भी अनेकरूपी है। यहाँ हिमालय है; गंगा, जमुना और सरजू भी हैं। कवि इस वैविध्य पर लहालोट है। इतना ही नहीं यह आम, नीम, बट, पीपल, कदम्ब के साथ-साथ कोयल, पपीहा आदि का भी देश है। यह नानक, कबीर, तुलसी, सूर का देश है। यह राम और कृष्ण के विमल यश का देश है। बात इतनी ही नहीं है। यह किसानों, खेतों और फसलों वाला देश है जहाँ धान के खेतों में बालियों के रूप में सुख झूलते हैं - 'जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया।' यहाँ कोयल जो है उसका होना उसके कुहुकने (कूकने) में है। पपीहा के 'पी-पी' (पिऊ पिऊ) से विरहिणी के हृदय की हूक का तार जुड़ा हुआ है। जो इस संदर्भ से वाकिफ नहीं, वो भारत से ठीक से वाकिफ नहीं। वो भारत के आमजन की व्यथा से वाकिफ नहीं। विरहिणी के हिया की हूक की वजह है उसके पति का परदेस गमन। यह परदेस गमन रोजी-रोटी के लिए। इतना संदर्भ समेटे है यह पंक्ति- 'पपिहा के पी पी जिउवा साले रे बटोहिया।' इस गीत में भारत को जितना बाहर से देखा गया है उतना ही भीतर से। इस सुंदर सुभूमि के आगे जन रघुवीर सिर नवाते हैं-

"अपर प्रदेस देस सुभग सुघर भेस, मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया।

सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि, जन 'रघुवीर' सिर नावे रे बटोहिया।"

कवि किसी जॉर्ज पंचम से अधिक अपने देशवासियों को संबोधित कर रहा है। वह भारत के गौरवशाली सांस्कृतिक अतीत, प्राकृतिक वैशिष्ट्य और जन-जीवन के हूक-हुलास को वाणी दे रहा है। वह आजादी

के पूर्व का अविभाजित भारत है। सुनने में आता है कि गाँधी जी को यह गीत बहुत प्रिय था। इस गीत के महत्व के बारे में भगवत शरण उपाध्याय ने भी लिखा है।

इसी कालखंड की दूसरी महत्वपूर्ण और बहुचर्चित रचना है 'अछूत की शिकायत'। यह 1914 की रचना है। हम सब जानते हैं कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसको 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित किया था। 'बटोहिया' में जो गर्वीली विनम्रता है वो इसमें नहीं है। इसमें भारत की एक भिन्न किंतु वास्तव वाली तस्वीर उभरती है। 'बटोहिया' को पढ़ते- सुनते माथा ऊँचा होने लगता है और 'अछूत की शिकायत' पढ़ते हुए माथा न केवल झुकने लगता है बल्कि मन में अनेक बातें चलने लगती हैं। कई तस्वीरें उभरने लगती हैं और महसूस होने लगता है कि इस वास्तव को बदले बिना भारत की आजादी सम्भव नहीं। जॉर्ज पंचमों से आजादी के साथ-साथ इस भेदभावमूलक सामंती-ब्राह्मणवादी व्यवस्था से भी मुक्ति अनिवार्य है। इसमें दलित का फरियादी स्वर है। दलितों को भारत में एक लंबे समय तक अछूत माना जाता था। सदियों से इस पूरे समुदाय पर जुल्म-ज्यादतियाँ होती आई हैं। आज हालात में काफी कुछ बदलाव आया हुआ है। पर, अभी भी इस समुदाय की मुश्किलें कुछ बनी हुई हैं। आज भी यह समुदाय सदियों से चली आ रही जकड़न के खिलाफ आंदोलित है। यह कहना बिल्कुल तर्कसंगत है कि भारत के दलित-समुदाय की बदहाली के रहते भारत की कोई भी सुसंस्कृत, मोहक, शानदार छवि का कोई मतलब नहीं। तब क्या 'बटोहिया' के महत्व का कोई मतलब है अथवा नहीं? यह विचारणीय है। 'बटोहिया' के सचेत पाठ के साथ यह समझ जरूर बननी चाहिए कि इसमें कबीर, नानक, बुद्ध के नाम भी हैं और ये नाम महज नाम नहीं हैं। ये नाम जहाँ आएँगे अपने ऐतिहासिक संदर्भों के साथ आएँगे। बुद्ध का नाम जब आता है तो उनका दर्शन भी संदर्भ सहित आ ही जायेगा और दलित संदर्भों में इस दर्शन का महत्व निर्विवाद है।

'अछूत की शिकायत' में 'साहेब' से 'विनती' सुनाने की बात है। 'पादरी साहेब' की कचहरी में जाकर अपनी फरियाद सुनाने की। पादरी साहेब की कचहरी का मतलब अंग्रेजों की न्याय-व्यवस्था है। इसमें ध्यान देने की बात है कि 'हमनी' शब्द का प्रयोग है 'हम' का नहीं। भोजपुरी में 'हमनी' का प्रयोग बहुवचन 'हमलोग' के अर्थ में होता है और 'हम' का प्रयोग एकवचन उत्तमपुरुष 'मैं' के अर्थ में। अतः यह शिकायत किसी एक दलित की न होकर पूरे समुदाय की तरफ से है। पादरी साहेब की कचहरी में जाकर जो शिकायत करनी है वो दलित-समुदाय के प्रति बरते जा रहे भेदभाव और उपेक्षा की है। यह शिकायत भी नायाब तरीके से है। जिन जातियों ने अछूत बना रखा है उन जातियों के उन कर्मों का जिक्र करते हुए वह अपनी शिकायत करता है जिन कर्मों को ठीक से सोचा जाए तो श्रेष्ठकर्म तो नहीं ही कहा जा सकता है। पूरी कविता में पादरी साहेब की कचहरी में जो शिकायत करनी है उसकी पूरी एक लिस्ट

है। ब्राह्मणों, ठाकुरों, अहीरों को लेकर बहुत भला-बुरा नहीं कहा गया है। बस उनके कर्मों और जातिगत अहंकारों की चुटीले अंदाज में कलई खोली गई है।

साहेब से विनती की इस सोच पर भी सोचना जरूरी है। क्यों पादरी साहेब को ही वह अछूत शिकायत सुनाने को सोचता है? तो, बात यह समझ में आती है कि वहाँ जाति और छुआछूत की वह जटिल पेंच नहीं थी। दूसरी बात कि अंग्रेजी हुकूमत भारत की इस जटिल पेंच और तज्जन्य मानसिकता को भी समझती थी और अपने स्वार्थ के अनुसार दलितों के प्रति स्वयं को उदार बनाये हुए थी। यह अंग्रेजों की स्ट्रेटजी थी। इसी के चलते पादरी से शिकायत करने की एक स्पेस बनी हुई थी।

इसमें उदारवादी और उद्धारवादी हिन्दू मिथक भी आए हुए हैं। दलित-शिकायत के समक्ष ये मिथक भी मौन हैं। बेमन धर्मांतरण का भी जिक्र है। यह धर्मांतरण भेदभाव पर आधारित सामंती-ब्राह्मणवादी सत्ता-संस्कृति के चरम अमानवीय दबाव का परिणाम है। हीरा डोम के पास अपने जीवन और समाज की तल्ख अनुभूतियाँ थीं। सवर्णों के साथ- साथ पिछड़ों के कृत्य और दलितों के प्रति उनकी दृष्टि की भी समझ थी। ब्राह्मण, ठाकुर, साहूकार, अहीर, भाट - सबका इस कविता में उल्लेख है। हीरा उनके कर्मों पर सवाल उठाते हैं। कवि को अपने पसीने की कमाई पर भरोसा है और मिल जुलकर रहने और खाने पर-

"अपने पसेनवा के पइसा कमाइबि जा

घर भर मिली जुली बाँटि-चोटि खाइबि।"

'बटोहिया' और 'अछूत की शिकायत' दो तरह के पाठ रचती हैं। एक पाठ भारत के सांस्कृतिक-प्राकृतिक वैभव का है और दूसरा दलित-प्रश्नों का। दोनों अनिवार्य पाठ हैं। दोनों भारत-भूमि के पाठ हैं। राष्ट्रीय और सामाजिक उत्पीड़नों से मुक्ति के प्रश्न दोनों में मुखर हैं। दोनों ही में औपनिवेशिक भारत का एक कालखंड बोल रहा है।